SEMESTER – II

CC – 6

Unit – 3

History of Russia till 1945

______

"USSR UNDER LENIN"

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

सम्पर्क: 9430934482

रूस की बोल्शेविक क्रांति (नवंबर 1917) विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है । इतिहासकार एच. सी. वेल्स ने इसे इस्लाम के उदय के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना बताया है। इसी प्रकार प्रोफेसर लॉस्की कि ने इसे ईसा के जन्म के बाद की सबसे महत्वपूर्ण घटना माना है। यह क्रांति लेनिन(1870-1924) के नेतृत्व में हुआ था जिसने यह घोषणा की थी कि बुर्जुआ क्रांति संपन्न हो गई है और इतिहास अगले चरण की ओर बढ़ रहा है।

लेनिन इतिहास को अगले चरण में ले जाने के लिए वर्तमान कई नीतियों में परिवर्तन किया तथा कई नई नीतियों को लागू भी किया । इसमें उसके द्वारा अपनाई गई नई आर्थिक नीति (नेप- न्यू इकोनामिक पॉलिसी) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य शांति, कारखानों पर मजदूरों की समितियों का नियंत्रण, किसान को भूमि, सोवियत को संपूर्ण शक्ति और बहुभाषी लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार दिलाना था। जब लेनिन सत्ता में आया तब उसके सामने कई समस्याएं भी थी इनमें कुछ प्रमुख समस्या थी:

1- जर्मनी से संधि करके युद्ध समाप्त करना।

2- गृह युद्ध की हर संभावना को रोकना तथा ऐसा युद्ध छिड़ने पर उसमें विजय प्राप्त करना ।

3- किसानों, मजदूरों की आर्थिक स्थिति सुधारना ।

4- नवीन संविधान की व्यवस्था करना ।

5- साम्यवाद की स्थापना करना और उसे मजबूत करना, इत्यादि।

लेनिन ने अपने कार्यकाल (1917-1924) में सभी समस्याओं के निदान के प्रयास किया। लेनीन सर्वप्रथम प्रथम विश्व युद्ध (1914 -1918) से अपने आपको अलग कर लिया और जर्मनी के साथ 3 मार्च 1918 को संधि कर ली जिसे ब्रेस्ट लिटोवस्क(Brest-Litovsk) की संधि के नाम से जाना जाता है। इस संधि के अनुसार रूस को एस्थोनिया, लीवोनिया, कोर लैंड और पोलैंड पर अपना अधिकार त्यागना पड़ा। फिनलैंड और जॉर्जिया स्वतंत्र घोषित कर दिए गए उसको क्षतिपूर्ति स्वरुप भारी धनराशि जर्मनी को शीघ्र ही देने के लिए वचनबद्ध होना पड़ा। इस प्रकार

करीब संधि द्वारा रूस को करीब 5000000 वर्ग मील का विस्तृत क्षेत्र और लगभग छह करोड़ 60 लाख की जनसंख्या भी हाथ से धोना पड़ा । यह उसके संधि रूस के लिए घोर अपमानजनक थी, फिर भी लेनीन और उसके साथियों की दृष्टि में क्रांति सफल बनाने के लिए यह मूल्य कुछ अधिक नहीं था।

लेनिन जब सत्ता में आया और वहां साम्यवादी सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी तब कई लोग लेनिन तथा साम्यवादी सरकार के विरोध में उठ खड़े हुए जिससे रूस में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई । विरोधियों को विदेशी पूंजीवादी सरकारों के द्वारा भी समर्थन मिलना शुरू हो गया । इन विकट परिस्थितियों के बावजूद लेनिन डटा रहा और इससे निपटने की तैयारी शुरू कर दी। लेनिन के विरोधियों में प्रमुख रूप से तीन प्रकार के लोग थे:

1- रोमनोवा राजवंश के समर्थक जो जार शाही शासन को फिर से स्थापित करना चाहते थे।

2- लोकतंत्र वादी चाहते थे कि रूस में फ्रांस एवं अमेरिका की तरह लोकतंत्र स्थापित हो, संविधान परिषद निर्वाचित की जाए और लोकमत को दृष्टि में रखते हुए नए शासन विधान का निर्माण किया जाए।

3-बोल्शेविक पार्टी की वे लोग जो साम्यवादी तो थी किंतु क्रांतिकारी उपायों से समाज के आर्थिक संगठन को एकदम बदल देना उचित नहीं समझते थे।

लेनिन जिस वर्ग के विशेष समर्थन से सत्ता में आया था, उसकी स्थिति को सुधारने का प्रयास किया। यह विशेष वर्ग था- किसान और मजदूर वर्ग। शुरुआती दौर में लेनिन ने मार्क्स के सिद्धांतों के अनुकूल आर्थिक व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया। अपने युद्ध साम्यवाद (1918 से 1921) नीति के तहत सर्वप्रथम भूमि जमींदारों से छीन कर राज्य की भूमि घोषित कर दी गई और फिर उसको किसानों में बांट दिया गया। सरकार को या हक था वह किसानों के पास उसके खाने लायक अनाज छोड़कर बाकी अनाज उसे प्राप्त कर सकें। अनाज को संग्रह करने वाले किसानों को कठोर सजा देने की नीति अपनाई गई। जब इससे रूस में असंतोष बढ़ने लगा, उत्पादन कम होने लगा तब लेनिन ने अपनी नई आर्थिक नीतियों की घोषणा की। जिसमें गरीब किसानों को राहत पहुंचाने का कार्य किया गया।

इसी प्रकार लेनिन की सरकार ने 1920 ईस्वी के एक आदेश के द्वारा वे समस्त कारखाने जिनमें 5 मजदूरों से अधिक काम करते थे एवं जो यांत्रिक शक्ति का प्रयोग नहीं करते थे तथा वे कर खाने जो यांत्रिक शक्ति का प्रयोग करते थे परंतु जिसमें 10 मजदूरों से अधिक काम करते थे सरकार के नियंत्रण में ले लिए गए। उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के कारण निजी व्यापार बंद हो गई, बैंकों का कार्य लगभग समाप्त हो गया। इससे उत्पादन गिरना शुरू हो गया, बेरोजगारी बढ़ती चली जा रही थी ।लेनिन इसकी समीक्षा तथा अपने नई आर्थिक नीति के द्वारा उद्योगों को एक नई गति देने का प्रयास किया।

लेनिन जब सत्ता में आया तब उसने 1918 में नवीन संविधान को अपनाया।

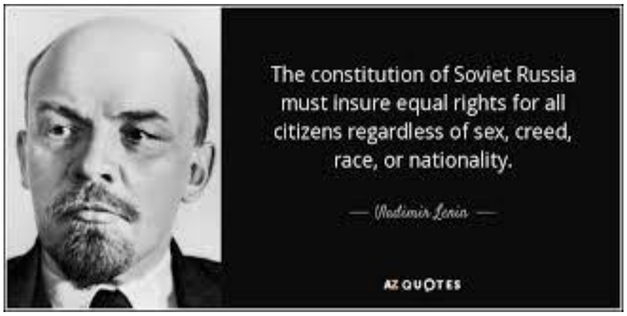

नवीन संविधान के प्रमुख अंग :

1 -अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस ।

2- अखिल रूसी केंद्रीय व्यवस्थापिका।

3- मंत्रिमंडल (people's commissions)

अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस प्रत्येक नगर, ग्राम तथा जिले के मजदूरों तथा किसानों का एक संगठन होता था जिसे सोवियत कहा जाता था। ये सोवियत प्रांतीय समिति के लिए प्रतिनिधि चुनती थी, जो बाद में केंद्रीय सोवियत कांग्रेस का चुनाव करते थे। इनके पास राज्य की सर्वोच्च सकती थी। अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस केंद्रीय व्यवस्थापिका का निर्वाचन करती थी जिसके सदस्यों की संख्या लगभग 200 थी। कानून पास करने का काम इसी का था। बाद में अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस इन कानूनों को अंतिम स्वीकृति प्रदान करती थी। केंद्रीय व्यवस्थापिका मंत्री मंडल का चुनाव करती थी। प्रत्येक विभाग के मंत्री को कामीसार (commissar) कहा जाता था। बाद में 1936 में इस संविधान के स्थान पर एक नवीन संविधान बनाया गया।

इस प्रकार, लेनिन ने क्रांति के पश्चात पहली बार मार्क्स के सिद्धांतों को मूर्त रूप देते हुए रूस में साम्यवादी सरकार की स्थापना की। कृषि, उद्योग बैंक इत्यादि सभी का राष्ट्रीयकरण कर दिया। स्त्रियों तथा पुरुषों को सम्मान राजनीतिक आधार प्रदान किए गए तथा उनकी मजदूरी में वृद्धि की गई, हालांकि सरकार की इन नीतियों का दुष्प्रभाव विभिन्न क्षेत्र में

दिखाई देने लगे। कृषि उत्पादन में कमी, औद्योगिक क्षेत्रों में गिरावट, विदेशी मुद्रा भंडार में कमी इत्यादि से रोष बढ़ता जा रहा था, तभी लेनिन ने सुधार के प्रयास करते हुए नई आर्थिक नीति की घोषणा की।

नोट: लेनिन की नई आर्थिक नीति की चर्चा अगली e-content में विस्तार से की जाएगी

Suggested Readings :

1. E. H. Carr – International Relations between the Two world Wars – 1919, 1939.
2. Partha Sarthi Gupta – यूरोप का इतिहास, भाग-2
3. लाल बहादुर वर्मा – यूरोप का इतिहास, भाग-2
4. देवेंद्र सिंह चौहान – समकालीन यूरोप, भाग-2